

Vol 6 Issue 7 April 2017

ISSN No : 2249-894X

---

*Monthly Multidisciplinary  
Research Journal*

*Review Of  
Research Journal*

Chief Editors

---

**Ashok Yakkaldevi**  
A R Burla College, India

**Ecaterina Patrascu**  
Spiru Haret University, Bucharest

**Kamani Perera**  
Regional Centre For Strategic Studies,  
Sri Lanka

## Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595

ISSN No.2249-894X

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

### Regional Editor

Dr. T. Manichander

Sanjeev Kumar Mishra

### Advisory Board

Kamani Perera Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka	Delia Serbescu Spiru Haret University, Bucharest, Romania	Mabel Miao Center for China and Globalization, China
Ecaterina Patrascu Spiru Haret University, Bucharest	Xiaohua Yang University of San Francisco, San Francisco	Ruth Wolf University Walla, Israel
Fabricio Moraes de Almeida Federal University of Rondonia, Brazil	Karina Xavier Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA	Jie Hao University of Sydney, Australia
Anna Maria Constantinovici AL. I. Cuza University, Romania	May Hongmei Gao Kennesaw State University, USA	Pei-Shan Kao Andrea University of Essex, United Kingdom
Romona Mihaila Spiru Haret University, Romania	Marc Fetscherin Rollins College, USA	Loredana Bosca Spiru Haret University, Romania
	Liu Chen Beijing Foreign Studies University, China	Ilie Pinteau Spiru Haret University, Romania
Mahdi Moharrampour Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran	Nimita Khanna Director, Isara Institute of Management, New Delhi	Govind P. Shinde Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai
Titus Pop PhD, Partium Christian University, Oradea, Romania	Salve R. N. Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur	Sonal Singh Vikram University, Ujjain
J. K. VIJAYAKUMAR King Abdullah University of Science & Technology, Saudi Arabia.	P. Malyadri Government Degree College, Tandur, A.P.	Jayashree Patil-Dake MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC), Kachiguda, Hyderabad
George - Calin SERITAN Postdoctoral Researcher Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi	S. D. Sindkhedkar PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [ M.S. ]	Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary Director, Hyderabad AP India.
REZA KAFIPOUR Shiraz University of Medical Sciences Shiraz, Iran	Anurag Misra DBS College, Kanpur	AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI, TN
Rajendra Shendge Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur	C. D. Balaji Panimalar Engineering College, Chennai	V.MAHALAKSHMI Dean, Panimalar Engineering College
Awadhesh Kumar Shirotriya	Bhavana vivek patole PhD, Elphinstone college mumbai-32	S.KANNAN Ph.D , Annamalai University
	Awadhesh Kumar Shirotriya Secretary, Play India Play (Trust), Meerut (U.P.)	Kanwar Dinesh Singh Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India  
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.oldror.lbp.world



# REVIEW OF RESEARCH



## “बालगंधर्वजी का चित्रपट संगीत पर प्रभाव”

प्रा. सचिन सुरेशराव बंडगर

सहा.प्राध्यापक (संगीत)

श्रीमती राधादेवी गोयनका महिला महाविद्यालय अकोला.

### प्रस्तावना :-

मराठी रंगमंच पर नाट्यसंगीत के निरन्तर 50 वर्ष तक सम्राट पद सुभोशित करने वाली अत्यंत मधुर स्वर भावना पूर्ण आवाज अनन्त काल में विलिन हो गयी है। अवर्णनीय सौंदर्य उत्कृष्ट अभिनय तथा अदभूत गायन इन गुणों का त्रिवेणी संगम याने ‘बालगंधर्व’ उपाधि आवाज साथ देती रही तब तक नाट्य संगीत तथा भक्ती संगीत द्वारा लाखों गायन प्रेमियों को मंत्रमुग्ध करके नारायणराव ने सार्थक की इसका कारण था उनकी स्वर्गीय आवाज, गायन सौंदर्य एवं अभिनय।

### संशोधन की आवश्यकता :-

फिल्मों से पहले समाज में नाटकों का प्रचार था। जिस प्रकार आज फिल्मों से मनोरंजन होता है, उसी प्रकार ‘नाटक’ दिनभर के थके-माँहे समाज को कलाजन्य आनन्द प्रदान करते थे। ‘संगीत



नाटक’ का तक अभिन्न अंग था। इस संगीत नाटक का गायन और स्त्री अभिनय का बादशहा बालगंधर्वजी थे। बालगंधर्वजी की आवाज अत्यंत मधुर स्वर, भावनापूर्ण आवाज अनन्त काल में विलीन हो गयी है। सौंदर्य, उत्कृष्ट अभिनय तथा अदभूत गायन इन गुणों का त्रिवेणी संगम याने बालगंधर्व उपाधि आवाज साथ देती रही। यह नई पिढी को मालुमात होनी चाहिये इसीलिए संशोधन करना जरूरी है।

### संशोधन पध्दती :

प्रस्तुत संशोधन के लिये ऐतिहासिक संशोधन पध्दत और सर्वेक्षण पध्दत का उपयोग किया है। सर्वेक्षण अतंगत संकल्पनात्मक और विश्लेषणात्मक ऐसी दोनों पध्दत का उपयोग किया है। संकल्पनात्मक पध्दत में पुस्तकें, वार्षिक लेख, रेडिओ के कार्यक्रम संगीत शोधपत्र पत्रिका और इंटरनेट आदी का उपयोग किया है।

मराठी रंगमंच पर नाट्यसंगीत के निरन्तर 50 वर्ष तक सम्राट पद सुभोशित करनेवाली अत्यंत तथा अदभूत गायन इन गुणों का त्रिवेणी संगम याने ‘बालगंधर्व’ ऐसा समझा जाता था। लोकमान्य की ऋषि तुल्य तेजस्वी वाणी से निकली ‘बालगंधर्व’ उपाधि आवाज साथ देती रही तब तक नाट्यसंगीत, तथा भक्तीसंगीत द्वारा लाखों गायन प्रेमियों को मंत्रमुग्ध करके नारायण ने सार्थक की इसका कारण था उनकी स्वर्गीय आवाज गायन, सौंदर्य एवं अभिनय। ऐसी त्रिवेणी संगत युक्त अभिनेत्री रंगमंच पर आ भी गई तो तीनों गुणों में श्रेष्ठ ऐसी गंधर्व तुल्य आवाज कहा मिलती है। बालगंधर्व की आवाज से अलग प्रकार की इतने ही गायक गायिकाओं की आवाज अपने गुण विशिष्टता के कारण लोकप्रिय हुई है और भविष्य में भी होगी परन्तु बालगंधर्व की खनकती आवाज का गुण भूल कर भी बेसुरा न होता ऐसी सुरली मधुर आवाज अब सुनने को नहीं मिलेगी।

बालगंधर्वजी में आवाज, गायन, सौंदर्य और अभिनय ये तिन्ही कला के कारण चित्रपटसृष्टी पर प्रभाव पड़ा। चित्रपट संगीत की नवीनशैली का जन्म यही हुआ होगा। ऐसा कहना होगा। क्योंकि बालगंधर्व गायकी के संबन्ध में उसका विचार किया गया तो ऐसा देखने में आता है कि उनके गायन की कई हरकतें व स्थान जिन्होंने चित्रपट में आधुनिक माध्यम में संगीत की शुरुवात के समय दिया था वह अनेक संगीतकारों के मन में घर कर गया था उन्होंने अपनी शब्दप्रधान गायकी की धुनों में ये कई हरकतें इतनी कुशलता से दी कि यह सब ‘वह’ से आया है इसकी कल्पना भी श्रोता नहीं कर सके।

मास्टर कृष्णराव फुलमर्डीकर बालगंधर्व के समकालीन ही थे परन्तु सुधीर फडके उनकी पीढी के बाद के संगीतकारों में से थे जिनके संगीत पर बालगंधर्व का असर है। विशेष कर यमन, भीमपलासी बागेश्री इन रागों के आधार पर उन्होंने जो धुने बनाई है उनका आधार

बालगंधर्व की गायकी ही है। “ना ही खर्चली कवडी दगडी” से लेकर “येणार नाय आता” तक के सभी गीत सुनने पर बालगंधर्व की इन गीतों की धुनों की पार्श्वभूमि पर बालगंधर्व गायकी की छाप स्पष्ट दिखाई देती है।

सुधीर फडके, श्री रामचंद्र, वसंत देसाई इत्यादी मराठी संगीतकारों ने मराठी रंगमंच पर बालगंधर्व के इस संस्कार के कारण चलचित्रों में संगीत देने पर इतनी प्रचरता से उपयोग किया है कि उनकी संगीत प्रतिभा के लिए चरण स्पर्श ही करना होगा। मराठी नाट्य संगीत शास्त्रीय बाना चलचित्रों को दिया जाता है। उनमें उपयुक्त तीनों महान संगीतकार तो हैं ही साथ ही साथ अनिल विश्वास, मदनमोहन रोशन, नौशाद, सज्जाद, एस.बी. बर्मन, सलील चौधरी इत्यादी हिन्दी चित्रपट संगीत के संगीतकार भी थे। सफलता असफलता की परवाह न करते हुये इन संगीतकारों को जो संगीत चित्रपट में दिया उसके लिए ये बधाई के पत्त हैं। शास्त्रीय संगीत का प्रत्यक्ष गायकी का भाग न लेते हूँ। हरकते मीड, खटके, छोटी छोटी ताने इत्यादी शास्त्रीय संगीत के अंलकार अपनी धुनों में देकर तथा काव्य का आशय भी उतना ही प्रभावशाली बनाकर उसे उतने ही प्रभावपूर्ण ढंग से पेश करने की कुशलता असाधारण ही थी।

#### उपसंहार :

परदे के आगे गाने वाला गायक परदे के पीछे से गाने लगा इस बीच के अंतराल में होनेवाले गायन में किस प्रकार परिवर्तन होते गये। यद देखना जरूरी है। साकी, दिडी के गायन से शुरु होकर बाद में यह गान ख्याल, तुमरी इत्यादी गायकी का भी आधार लेने लगा। उसमें बालगंधर्व के गायन की भिन्नता यही थी की धुन यदि शास्त्रीय हो तो भी नाटक के कथानक में बहतर उसे शास्त्रीयता से कम से कम बाधा पहुंचे इस प्रकार की उनकी गायकी थी और गायन की यही शैली सफल होने के कारण उन्हें लोग बार-बार “वन्स मोर” देते थे। नहीं तो नाटक देखने आने वाले लोग इतनी गायनतिरेशोषित सहन ही नहीं कर पाते। चित्रपट संगीत में भी इसीलिए यह संगीत लोकप्रिय हुआ।

#### संदर्भ ग्रंथसूची :

- 1) भडकमरक अभिराम ‘असा बालगंधर्व’ राजहंस प्रकाशन पुणे.
- 2) आठवले पं.वि.रा. ‘नादचिंतन’ संस्कार प्रकाशन मुंबई.
- 3) क्षीरसागर पांडरंग गणेश ‘नटसम्राट बालगंधर्व यांच्या नवल कथा.
- 4) गोडबोले रा.ब. ‘संगीताचे साम्राज्य’ महेश्वर मुद्रणालय अमरावती.
- 5) सामंत बाळ ‘तो राजहंस एक’ श्री विदया प्रकाशन.

# Publish Research Article

## International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper, Summary of Research Project, Theses, Books and Books Review for publication, you will be pleased to know that our journals are

### Associated and Indexed, India

- ★ Directory Of Research Journal Indexing
- ★ International Scientific Journal Consortium Scientific
- ★ OPEN J-GATE

### Associated and Indexed, USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Database
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal  
258/34 Raviwar Peth Solapur-  
413005, Maharashtra  
Contact-9595359435

E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com